unacademy

समकालीन कहानी / साठोत्तरी कहानी

नयी कहानी के बाद की हिन्दी कहानी को सामान्यतः समकालीन कहानी या साठोत्तरी कहानी कह दिया जाता है। इसके अंतर्गत कई कहानी आंदोलन सीमित या व्यापक रूप में दिखते हैं जिनमें प्रमुख हैं- अकहानी समानांतर कहानी, जनवादी कहानी, सचेतन कहानी सहज कहानी तथा सक्रिय कहानी। इन आंदोलनों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है-

(1) अकहानी

अकहानी आंदोलन का सूत्रपात 1960 के दशक में 'नई कहानी' के विरोध में हुआ। यह फ्राँस के 'एन्टी स्टोरी मूवमेंट' से प्रभावित आन्दोलन है। इस आन्दोलन की कहानियों में जीवन के प्रति

unacademy

अस्वीकार का भाव वैसे ही दिखता है जैसे अकविता की कविताओं में दिखाई पड़ता है। सभी मूल्यों में गहरी अनास्था प्रकट करती यह कहानी धारा अजनबीपन एवं निरर्थकता बोध को प्रश्रय देती है।

गंगा प्रसाद विमल की 'प्रश्न चिन्ह' दूधनाथ सिंह की 'रीछ', रवींद्र नाथ कालिया की, 'नौ साल छोटी पत्नी, अवध नारायण सिंह की 'आकाश का दबाव' आदि अकहानी के कुछ प्रमुख उदाहरण है।

अकहानी आंदोलन की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं- 1. जीवन मूल्यों का तिरस्कार: अकहानी जीवन मूल्यों को 'चुनौती देती हुई कुछ नए प्रश्न उपस्थित करती है। यही कारण है कि इसमें भाव बोध के धरातल पर आत्मपीड़न, ऊब, अकेलापन, अजनबीपन तथा विसंगति का चित्रण दिखाई देता है। यह वह दर्शन जिसके घेरे में

unacademy

अकहानी का बोध फंसा हुआ है तथा इसी कारण से अकहानी में पारंपरिक कथा धाराओं, अभिव्यक्ति के शिल्प और रचनागत मूल्यों की निर्मम अस्वीकृति का दर्शन होता है। डॉ. गंगा प्रसाद विमल अकहानी को व्याख्यायित करते हुए कहते हैं- " अकहानी कथा के स्वीकृत आधारों का विशेष तथा किसी भी तरह के मूल्य स्थापना का अस्वीकार है। "

परंपरा का पूर्ण नकार : अकहानी पुरानी व्यवस्था कोई

संबंध नहीं रखना चाहती बल्कि उसके प्रति नफरत और गुस्से की आग से जल रही मालूम पड़ती है। पुरानी पीढ़ी के प्रति विशेष रूप से बूढ़ी माँ और बूढ़े बाप के प्रति 'अकहानी' ने काफी आक्रोश प्रकट किया है। अकहानी में पति और पत्नी के दांपत्य जीवन के पुराने

unacademy

मूल्य सतीत्व, पतिव्रत आदि भी ध्वस्त होते हुए दिखाई देते हैं। वहाँ पति-पत्नी में आत्मीयता और अंतरंगता की जगह घुटन, तनाव और नफरत ने ले ली है।

3. अतिशय आधुनिकता अकहानी, अतिशय आधुनिकता पर जोर देती है और इसी कारण से वह समाज से कट जाती है। अकहानी 'संबंधहीनता' तथा 'संबंधाभाव' कीस्थितियों को उभारती है। इसमें संबंधों के जिस संसार का चित्रण है, वह बहुत भयावह, तकलीफदेह और निर्मम है। अकहानी में व्यक्ति की निराशा, कुंठा और पराजय का चित्रण अधिक किया गया है तथा अकहानी आम आदमी की जिंदगी की मूल समस्याओं से कटी हुई है। निरर्थकता बोध को

unacademy

अकहानीकारों ने पर्याप्त रूप से रेखांकित किया है। इस तरह इस पर विदेशी आधुनिकता का प्रभाव अधिक है।

4. यौन-उन्मुक्तता: अकहानी में पर-पुरुष या पर- स्त्री के साथ संभोग के दृश्यों का वर्णन विस्तार से हुआ है। इसके अतिरिक्त 'अकहानी' के अन्तर्गत समलैंगिक सम्पर्क तथा पशु संपर्क की कहानियाँ भी लिखी गई। वस्तुतः अकहानीकारों ने यौन संबंधों को बहुत अधिक महत्त्व दिया है।

5. शिल्पगत अमूर्तता: शिल्प के स्तर पर अकहानी आंदोलन पारंपरिक शिल्प का विरोध तो करता ही है, साथ ही नए शिल्प के प्रति भी उदासीन हैं। यह एक शिल्पहीन आदोलन है। यह अनुभूत सत्य को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करने के लिए ही अपनी प्रतिबद्धता जाहिर

unacademy

करता है। अकहानी के पात्र प्रतीक रूप में स्थिति का संकेत देते हैं। कई जगह पात्रों के नाम भी नहीं होते हैं, बल्कि स्थिति का अमूर्त प्रभाव पैदा करने के लिए क, ख, ग को संकेत रूप में पात्र मान लेते हैं। इसके अतिरिक्त, अकहानी में। जहाँ एक ओर शिल्प विघटन का सुन्दर रूप दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर अकहानी फैंटेसी, डायरी, मोनोलोग, संस्मरण, आत्मप्रलाप तथा अन्य विधाओं की विशेषताएँ लिए हुए है। कहीं-कहीं अकहानी के शिल्प में अस्वाभाविकता दिखाई देती है तो दूसरी ओर उसमें समरसत्ता, नाटकीयता तथा आकस्मिकता का प्रभाव भी दिखाई देता है। कुल मिलाकर अकहानी अमूर्त शैली को लेकर चलती है।

(2) समानान्तर कहानी

unacademy

1. 'समानान्तर कहानी आन्दोलन' आठवें दशक में कथाकार कमलेश्वर द्वारा चलाया गया महत्त्वपूर्ण कहानी आन्दोलन है। 2. सन् 1972 एक ओर 'सारिका' पत्रिका तथा दूसरी ओर

'समानान्तर प्रथम' कहानी संग्रह के माध्यम से कमलेश्वर ने इस आन्दोलन को क्रमशः आलोचना तथा रचना के धरातल पर प्रतिफलित किया। 'सारिका' पत्रिका के अक्टूबर, 1974 से लगातार दस अंकों की एक श्रृंखला 'समानान्तर कहानी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुई। पुनः 1977 में तीन विशेषांक और निकाले गए। 3. कमलेश्वर, कामतानाथ इब्राहीम शरीफ सतीश जमाली

आदि इस आन्दोलन से जुड़े प्रमुख कहानीकार हैं। 4. 'समानान्तर कहानी आन्दोलन' की पृष्ठभूमि में सातवें दशक के अंत में जन्म

unacademy

लेता यह अनुभव था कि देश में आम आदमी का एक बहुत बड़ा वर्ग कहानियों से

उपेक्षित हो गया है। 'आम आदमी' को ही केंद्र में रखकर इस आन्दोलन से जुड़े कहानीकारों ने कहानियों का सृजन किया।

5. इस आन्दोलन के कहानीकार वामपंथ के इस विचार से

सहमत थे कि साहित्य के केंद्र में आम आदमी होना चाहिए किन्तु वे समाजवादियों के 'सर्वहारा' चिंतन से सहमत नहीं थे। इनके अनुसार 'सर्वहारा' एक खास सिद्धान्त से जुड़ा शब्द है और यह भारत में 'आम आदमी' की समग्रता के प्रति न्याय नहीं कर सकता। समानांतर कथाकारों ने देश में आम आदमी के आर्थिक अभाव, संघर्ष और समस्याओं को पहचाना और इसी चेतना ने उन्हें आम आदमी को

unacademy

साहित्य के केंद्र में लाने की प्रेरणा दी। 6. समानांतर कहानी के दो पक्ष हैं- एक पक्ष में वह उन सारी शक्तियों के उन्मूलन का स्वरघोष करती है जिनके कारण वर्तमान समाज में सामान्य आदमी ऐसे दमघोंटू वातावरण में रहता है जहाँ उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार भी लुप्त हो गया है। दूसरे पक्ष में आम आदमी के संघर्ष की अभिव्यक्ति की गई है। 7. आम आदमी का संघर्ष उस शोषणप्रधान व्यवस्था से है, जिसमें सामंतवादी, पूंजीवादी और संप्रदायवादी शक्तियों की साजिश शामिल है। समानांतर कहानी में इस संघर्ष को बखूबी चित्रित किया गया है। समानांतर कहानी संस्थाओं और व्यवस्थाओं के वर्ग-चरित्र की पहचान करती है तथा उन्हें बेनकाब करती है।

unacademy

8. समानांतर कहानी में शिल्प का आग्रह नहीं है। कहानी को अमूर्त बनाने वाले शिल्पगत तत्त्वों बिंब, प्रतीक आदि का निषेध है। विषय के अनुरूप भाषा रूपाकार ग्रहण करती चलती है। वह सहज, बेधक तथा अनौपचारिक है। 9. जवाहर सिंह की 'गुस्से में आदमी', हिमांशु जोशी की 'जलते हुए डैने', स्वदेश दीपक की 'तमाशा' आलम शाह खाँ की 'परायी प्यास का सफर' गंगा प्रसाद विमल की 'उसकी पहचान' आदि प्रमुख समानांतर कहानियाँ हैं। 10. यदि हम समानांतर कहानी आन्दोलन की उपलब्धियों की बात करें तो हम इसकी निम्नलिखित उपलब्धियों को रेखांकित कर सकते हैं-

unacademy

(क) सातवें दशक के अन्त में हिन्दी कहानी में एक अवरोध दिखाई देता है। इसे समानान्तर कहानी ने तोड़ा।

(ख) भावोद्रेकों में जकड़ी कहानी को समानान्तर कहानी ने आम आदमी की पीड़ा से जोड़ने का काम किया। (ग) इसने हिन्दी कहानी को आत्मकेन्द्रित अनुभववाद

से मुक्ति दिलायी। इसमें व्यक्ति की असहायता, मूल्यहीनता, नैतिक संकट आदि को विस्तृत सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में देखा गया।

(घ) इसमें आम आदमी के संघर्ष के साथ समग्र सामाजिक तंत्र को कुशलता से रेखांकित किया गया।

unacademy

(ङ) शिल्प के धरातल पर किसी विशिष्ट 'फॉर्म' के प्रति आग्रह नहीं रखा गया। कहानी की भाषा को स्पष्ट, सहज और संप्रेषणीय बनाया गया।

(3) जनवादी कहानी

1. हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में आठवें दशक के अन्त में 'जनवादी कहानी आन्दोलन' की पृष्ठभूमि बनती हुई दिखायी देती है। सामान्यतः सन् 1982 में दिल्ली में 'जनवादी लेखक संघ' की स्थापना के साथ 'जनवादी कहानी आन्दोलन' का आरंभ माना जाता है। यह आन्दोलन स्वयं को प्रेमचन्द की कहानी परंपरा के विकास के रूप में देखता है।

unacademy

2. 1982 ई. से लेकर अब तक इस कहानी आन्दोलन से जुड़े कई रचनाकार कहानी लेखन के क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं जिनमें स्वयंप्रकाश, रमेश उपाध्याय, असगर वजाहत, शिवमूर्ति संजीव, सूरज पालीवाल आदि प्रमुख हैं। 3. यह आन्दोलन यह स्वीकार करता है कि मध्यवर्ग का भविष्य सर्वद्वारा के साथ है और उसे सर्वहारा ही बल प्रदान कर सकता है।

4. यह कहानी सर्वहारा पर किए जा रहे शोषण के विरुद्ध संघर्ष पर सर्वाधिक बल देती है और किसान मजदूर आदि के संघर्ष को सूक्ष्मता एवं सजगता से उभारती है। 5. जनवादी कहानी में मध्यमवर्ग के विभिन्न आयाम खुलते। हुए दिखायी देते हैं। इनमें सर्वाधिक बल मध्यवर्गीय संस्कारों से मोह भंग पर है। इसके अतिरिक्त

unacademy

आत्मालोचना सामाजिक विसंगतियों के प्रति तीव्र असंतोष तथा सर्वहारा के निकट जाने की लालसा इन पक्षों पर जनवादी कहानी विशेष बल देती है।

6. जनवादी कहानी का वैशिष्ट्य यह है कि वह समस्याओं को जीवन के बीच से उठाती है। यह मार्क्सवादी विचारधारा को स्वीकार करती है, किन्तु उसे अनुभव से जोड़कर प्रस्तुत करती है।

7. जनवादी कहानी कथ्य के अनुरूप सहज शिल्प एवं भाषा के प्रयोग पर विश्वास करती है।

8. काशीनाथ सिंह की 'सुधीर घोषाल', स्वयंप्रकाश की 'सूरज कब निकलेगा', शिवमूर्ति की 'कसाईबाड़ा' संजीव की 'अपराध' आदि इस धारा की प्रमुख कहानियाँ हैं।

unacademy

(4) संचेतन कहानी

यह आंदोलन 1960 ई. के बाद महीप सिंह द्वारा शुरु किया गया। इनका दावा है कि 'नई कहानी' तथा 'अकहानी' के दौर की कहानियाँ संत्रास और निरर्थकता बोध को इतना ज्यादा दिखाती हैं कि जीवन जीने की इच्छा खत्म होने लगती है। सचेतन कहानी संघर्ष और जागरूकता का समर्थन करती है। इसके प्रमुख उदाहरण हैं- महीप सिंह की 'कील' तथा शैलेश मटियानी की 'उसने नहीं कहा था।

(5) सहज कहानी

इस आंदोलन के प्रवर्तक अमृत राय थे, हालांकि उन्होंने कहा है कि यह कोई 'आंदोलन' नहीं है सहज कहानी का दावा है कि इतने सारे आंदोलनों द्वारा कहानी पर विचारधाराएँ थोपे जाने के कारण वह

unacademy

मूल 'कथा-रस' खत्म हो गया जो कहानियों का प्राण माना जाता है। अतः सहज विषयों तथा सहज भाषा में कहानी लिखना ही सहज कहानी की मांग है। नासिरा शर्मा और रमेश बत्रा इस दौर के प्रमुख लेखक हैं।

(6) सक्रिय कहानी

यह आंदोलन 1962 ई. में राकेश वत्स द्वारा 'मंच' पत्रिका के माध्यम से शुरु किया गया। इनका दावा है कि कहानीकारों को समस्याओं का निष्क्रिय प्रस्तुतीकरण नहीं करना चाहिए, बल्कि उनसे लड़ने का हौंसला भी पाठक को देना चाहिए। राकेश वत्स की कुछ कहानियाँ इस दौर में प्रसिद्ध हुईं, जैसे- हमें अपनी लड़ाई खुद लड़नी है' और 'एक न एक दिन'।

unacademy

(7) हिन्दी कहानी की वर्तमान स्थिति

1. विगत दो-तीन दशकों हिन्दी कहानी परिवर्तन के दौर से गुजरती रही है। यह परिवर्तित युग-परिवेश का परिणाम है। आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण का तीव्र प्रसार, साप्रदायिकता का नवउभार तथा व्यक्तिवादिता के चरम 'उफान ने हिन्दी कहानी को कथ्य और शिल्प दोनों ही स्तरों पर प्रभावित किया है।

2. आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण को लेकर पुरानी - पीढ़ी बीच की पीढ़ी और नई पीढ़ी सभी पीढ़ियों के कथाकारों ने बेहतरीन कहानियाँ लिखकर अपने समय में सार्थक हस्तक्षेप किया है। वैश्वीकरण ने सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक राजनीतिक सभी स्तरों पर परिवर्तन उपस्थित किया है। सार्वजनिक संस्थानों का निजी

unacademy

संस्थानों बदल जाना, निजीकरण के नाम पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन और उनका बढ़ता वर्चस्व, इनके द्वारा उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद का तीव्र प्रसार आदि ऐसी स्थितियाँ हैं जिनसे वर्तमान हिन्दी कहानी टकरा रही है।

हिंदी नाटक –

नाटक के तत्व

पश्चात्य विद्वानों के मतानुसार नाटक के प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं---

1. कथावस्तु

unacademy

2. पात्र चरित्र-चित्रण

3. संवाद या कथोपकथन

4. भाषा-शैली

5. देशकाल और वातावरण

6. उद्देश्य

7. संकलनत्रय

8. रंगमंचीयता

भारतीय विद्वानों के अनुसार नाटक के तत्व इस प्रकार है---

unacademy

1. कथावस्तु

2. नेता (नायक)

3. अभिनय

4. रस

⟶ नाटक शब्द की व्युरूपति एवं अर्थ ⟶ नाटक शब्द वह धातु में 'अफ' (ण्पुल) के प्रत्यय के जुड़ने से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'अभिनय' या 'नृत्ज' अर्थात अभिनय या नृत्य के माध्यम से किसी वस्तु को प्रस्तुत करना ही नारक कहलाता है

नाटक की परिभाषा - सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि ने एवं तदुपरांत आचार्य धनंजय ने नाटक की परिभाषा देते हुये लिखा है "अवस्थानुकृतिर्नाट्यम"

unacademy

अर्थात किसी अवस्था या दशा का अनुकरण करना ही नाट्य काव्य या नाटक कहलाता है।

⟶ नारक की उत्पत्ति - नाटक की उत्पति के सम्बंध में प्राप्त होने वाली मतों को प्रमुखतः दो भागो में विभाजित किया जाता है-

1. भारतीय मत

2. पाश्चात्य मत

1. भारतीय मत नाटक की उत्पति के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए आचार्य भरत मुनि ने स्वरचित नाट्यशास्त्र रचना में लिखा है कि चारो वेदों की रचना करने के बाद लोगो के द्वारा निवेदन किये जाने पर भगवान ब्रह्मा ने चारों वेदो से एक-एक सारभूत तत्त्व लेकर 'नाट्य वेद' नामक पंचम वेद की रचना की थी

unacademy

** जग्राह पाठ्यम् ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतमेवच ।

यजुर्वेदादमिनयं रस्तानाथर्वणादपि ॥"

(1) ऋग्वेद - पाठ्य / विषयवस्तु / संपाद

(2) सामवेद - गीत

(3) यजुर्वेद - अभिनय

(IV) अथर्ववेद- रस

⟶ भगवान ब्रह्मा ने इस 'नाट्य वेद' का ज्ञान सर्वप्रथम अचार्य भरतमुनि को प्रदान किया था। भरतमुनि ने यह ज्ञान अपने सौ पुत्रो को प्रदान किया था

unacademy

⟶ आचार्य भरतमुनि के निर्देशन में सर्वप्रथम देवताओं के समक्ष अमृत मंथन नामक समवकार श्रेणी का नाटक (रुपक) प्रस्तुत किया गया था।

⟶ इसके बाद भगवान शिव के समक्ष 'त्रिपुरदाह' नामक 'डिम' श्रेणी का नाटक (रूपक) प्रस्तुत किया गया था।

2 पाश्चात्य मत - नाटक की उत्पति के संबंध निम्नलिखित तीन पाश्चात्य विद्वानो के मत माने जाते हैं -

1) डॉ. 'पीशेल 'के अनुसार - कठपुतलियों के नृत्य से ।

2) प्रो. रिजवे के अनुसार - मृत आत्माओं की शांति के लिए गाये जाने वाले वाली गीतों से

3) प्रो. हिलेब्रॉ के अनुसार - विविध प्रकार के सवांगो से (स्वांगवाद से)

unacademy

⟶ नाटक के भेद । श्रेणियाँ ⟶ नाटक को मूलत: दृश्य काव्य या रुपक के नाम से पुकारा जाता है आचार्य धनंजय ने स्वरचि "दशरूपकम्' रचना में रूपक के दस भेद माने हैं- "नारकं सप्रकर्ण माण: प्रटसन डिमः ।

व्यायोग: समवकारी वीकेहामृगा इति ।।"

क्र.स.	रूपक या दृश्य काव्य का भेद	अंको की संख्या,
1.	भाण	01 अंक
2.	प्रहसन	01 अंक '
3.	व्यायोग	01 अंक
4.	वीधि	01 अंक
5.	अंक	01 या 04 अंक

unacademy

6. ईहामृग 01 या 04 अंक

7. समवकार 03 अंक

8. डिम 04 अंक

9. नाटक 05 से लेकर 10 तक

10. प्रकरण 10 अंक

⟶ 'नाटक' के लक्षण या प्रमुख विशेषताऐं⟶

1. नाटक का कथानक इतिहास प्रसिद्ध होना चाहिए।

unacademy

2. नाटक में धीरोदात्त श्रेणी का कोई प्रसिद्ध शासक / महापुरुष नायक होना चाहिए।

3. नाटक में पांच से लेकर दस तक अंक होने चाहिए।

4. नाटक में श्रृंगार अथवा 'वीर' में से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए एवं अन्य रसो का भी सहायक रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए।

5 नाटक में स्थान-स्थान पर ' सूर्योदय सूर्यास्त चन्द्रोदय, जल कीड़ा, हर्ष, विषाद, इत्यादि का वर्णन भी किया जाना चाहिए

1)प्राचीन इतिहासकारों के अनुसार इस नाटक का रचनाकाल 1700 ई. लगभग माना गया था परन्तु आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार महाराज विश्वनाथ सिंह का समय 1846 है। से 1912 ई. के मध्य निर्धारित किया गया है।

unacademy

2) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने पिता बाबू गोपालचन्द्र गिरिधर द्वारा रचित 'नहुष' नाटक को हिची का सर्वप्रथम मौलिक नाटक माना है।

⟶ हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम अभिनीत नाटक - 'जानकी मंगल 1868ई (लेखक - शीतला प्रसाद त्रिपाठी)

नोट- इस नाटक में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में भी लक्ष्मण पात्र की भूमिका निभाई थी।

⟶ हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम दुःखान्त नाटक रणधीर - प्रेम माहिनी- (लेखक - लाला श्री निवास दास) 1877 ई.

नोटः कुछ समीक्षको के दूद्वारा जयशंकर प्रसाद के 'प्रायश्चित' (1914 ई.) नाटक को भी सर्वप्रथम दुःखान्त नाटक के रूप में स्वीकार किया गया है।

unacademy

→ हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम अनूदित नाटक 'शाकुन्तल - 1863 ई (लेखक राजा लक्ष्मण सिंह)

नोट: यह हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली का सर्वप्रथम नाटक भी माना जाता है।

→ हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक अनूदित नाटक लिखने वाले लेखक - लाला सीताराम

नोट- ये हिन्दी साहित्य में अंग्रेजी के शेक्सपीयर द्वारा रचित सभी नाटकों का हिन्दी अनुवाद करने वाले लेखक भी माने जाते हैं।

हिन्दी साहित्य की सर्वप्रथम गीतिनाट्य रचना - करुणालय (लेखक - जयशंकर प्रसाद)

unacademy

⟶ हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक नाटकों के जन्मदाता - जयशंकर प्रसाद

⟶ हिन्दी साहित्य में समस्यात्मक नाटकों के जन्मदाता - लक्ष्मीनारायण मिश्र

⟶ हिन्दी नाटक साहित्य का कालविभाजन - हिन्दी साहित्य में अबतक लिखे गये समस्त नाटकों को निम्नानुसार चार काल खण्डों में विभाजित किया जाता है यथा -

1. पूर्व भारतेन्दुकालीन नाटक - 1857 ई. से पूर्व रचित नाटक
2. भारतेन्दुकालीन नाटक 1857 ई.से 1900 ई. तक
3. प्रसादकालीन नाटक 1900 ई. से 1930 ई. तक
4. प्रसादोतर कालीन नाटक 1930 ई. से अबतक